Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, DEC-JAN 2018, VOL- 5/25

आधुनिक भारत में शिक्षा पर संस्कृति का प्रभाव

डॉ. अखिलेश कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौढ़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

Abstract

मनुष्य न केवल एक सामाजिक प्राणी है बल्कि एक सांस्कृतिक प्राणी भी है। मनुष्य का सामाजिक जीवन सामाजिक संस्कृति से निर्धारित होता है। जिस प्रकार मानव जीवन की दिशा निर्धारित करने में संस्कृति का विशेष प्रभाव होता है, उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव सभी पहलुओं में देखा जा सकता है कि किसी समाज के सदस्य वास्तव में क्या सीखेंगे, कितना सीखेंगे और मनुष्य को एक परिपक्व व्यक्ति बनाने के लिए किस प्रकार की शिक्षा लेंगे। समाज की संस्कृति के रूप में जीवन के मूल्यों और लक्ष्यों का निर्धारण शिक्षा के प्रति समाज के सदस्यों के दृष्टिकोण को नियंत्रित करता है। उचित शिक्षा इसके सदस्यों के बीच जीवन के मूल्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करती है। संस्कृति हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न भौतिक और सामाजिक बुद्धिमत्ता कार्यों को करने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है। संस्कृति विशेष रूप से लोगों को बदलते परिवेश के अनुकूल ढलने और उचित ज्ञान और कौशल के माध्यम से उनके व्यवहार को परिष्कृत करने में मदद करती है। फिर, विभिन्न युगों का ज्ञान संस्कृति द्वारा ही संरक्षित और आगे बढ़ाया जाता है। भाषा, संस्कृति के एक घटक के रूप में शिक्षा के माध्यम से ज्ञान प्रदान करती है। आधुनिक शिक्षा का मुख्य कार्य लोगों को निपुणों के व्यवहार का आदी बनाना है। यहां संस्कृति यह तय करती है कि हमारे समाज में कौन सा व्यवहार उचित है। शिक्षा में एक विशेष भूमिका बच्चे को उसके भावी जीवन के लिए तैयार करना है। अर्थात् उचित शिक्षा से शिक्षित होकर बच्चा भावी जीवन में अपने पेशे की सर्वोच्च जिम्मेदारी निभा सकता है।

मुख्य बिंदु: दृष्टिकोण, अनुशासन, पाठ्यक्रम, आजीविका, समाज, संस्कृति।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तावना-

'कल्चर' एक अंग्रेजी शब्द है जो लैटिन भाषा के 'कोलरे' से बना है। इसे बंगाली में 'क्रिस्टी' भी कहा जाता है। व्युत्पत्तिशास्त्रीय अर्थ में, संस्कृति का तात्पर्य सुधार या संयम के माध्यम से प्राप्त की गई चीजों से है। इस अर्थ में, संस्कृति मानव शिक्षा, अनुष्ठान, निर्णय, रीति-रिवाज आदि का सुरुचिपूर्ण या संस्कृतकृत रूप है। इसलिए, 'संस्कृति' आम तौर पर अच्छी शिक्षा, नैतिकता, स्वाद और शिष्टाचार को भी संदर्भित करती है। दूसरे शब्दों में, संस्कृति अशिक्षा, अशिष्टता और असभ्यता के विपरीत हो सकती है। संस्कृति मनुष्य की प्रवृत्ति का परिणाम नहीं है, बल्कि परिस्थिति के अनुकूल मनुष्य के सावधानीपूर्वक किये गये प्रयासों का एकीकृत परिणाम है। इसलिए किसी भी समाज की संस्कृति एक लंबी अवधि का उत्पाद होती है। अतीत से लेकर वर्तमान तक हमारे जीवन का तरीका बदल गया है और परिष्कृत हो गया है। फिर, संस्कृति का स्वरूप और प्रकृति सदैव बदलती रहती है। भविष्य में परिवर्तन अपरिहार्य हैं। मानव समाज में संस्कृति का आकार और स्वरूप सदैव बदलता रहता है। भविष्य में परिवर्तन अपरिहार्य हैं। मानव समाज में संस्कृति की यह धारा सामाजिक विरासत के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रवाहित होती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, नई खोजें, विचार आदि सांस्कृतिक परिवर्तन के निरंतर प्रवाह को बढ़ावा देते हैं।

जिस प्रकार एक सामाजिक व्यक्ति विभिन्न सांसारिक मामलों में रुचि रखता है, उसी प्रकार वह कई अलौकिक मामलों में भी रुचि रखता है। इसलिए, लोग खेती करके, कारखानों में विभिन्न कला सामग्री और कला, संगीत और साहित्य का निर्माण करके भोजन का उत्पादन करते हैं। इसलिए उनके उत्साह का कोई अंत नहीं है. सामाजिक जीवन जीने वाले लोग दैनिक आवश्यकताओं के अलावा सामाजिक रीति-रिवाजों, रीति-रिवाजों और रहन-सहन की परंपराओं की आवश्यकता और प्रभाव से इनकार नहीं कर सकते। ये सभी चीजें मनुष्य के पर्यावरण द्वारा मानव सामाजिक संस्कृति का हिस्सा हैं। संस्कृति मानव जीवन में विभिन्न विचारों को उजागर करने में सहायता करती है। चूँकि सांस्कृतिक तत्व आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक तत्व ने किसी न किसी रूप में मानव जीवन को प्रभावित किया है। इसके महत्वपूर्ण उपनाम एक सामाजिक पहलू के

रूप में हैं। इसलिए, लोग अपनी विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न साधन या उपाय अपनाते हैं। ऐसा करने से मनुष्य की उन्नत सोच की आवश्यकता को संस्कृति कहा जाता है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्तिगत जीवन को स्वस्थ, सुन्दर एवं आरामदायक बनाने के लिए संस्कृति आवश्यक है। जीवन के समूह को नियंत्रित करना और व्यवस्था के साथ सामंजस्य स्थापित करना भी नितांत वांछनीय है। सामूहिक जीवन के प्रवाह को जारी रखने और बनाए रखने में संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

संस्कृति हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है। संस्कृति विशेष रूप से लोगों को अपने वातावरण को बदलने और उचित ज्ञान के माध्यम से अपने व्यवहार को परिष्कृत करने में मदद करती है। चूँकि समाज की आवश्यकताएँ ही शिक्षा को आकार देती हैं। संस्कृति यह निर्धारित करती है कि किसी समाज के सदस्य क्या, कितनी और किस प्रकार की शिक्षा सीखेंगे। चूँकि समाज की संस्कृति शिक्षा के प्रति समाज के लोगों के दृष्टिकोण को नियंत्रित करती है। यह उचित शिक्षा के माध्यम से उन लोगों के मूल्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करने में भी मदद करता है। शिक्षा का एक विशेष कार्य बच्चे को भावी जीवन के लिए तैयार करना है। शिक्षा और संस्कृति के बीच अटूट संबंध है।

शिक्षा के समाजशास्त्र का अध्ययन करने से शिक्षा में संस्कृति के महत्व का पता चलता है। इसलिए इस संबंध में विभिन्न शोधकर्ताओं के शोध को देखा जा सकता है। संस्कृति पर चर्चा करते समय हक्स 'जन संस्कृति' को दर्शाता है। जन संस्कृति उनके जैसे समाज के निचले वर्ग की संस्कृति है। बुर्जुआ समाजशास्त्रियों ने विभिन्न संदर्भों में लोकप्रिय संस्कृति का उल्लेख किया है। सामान्य लोगों की नियुक्ति को लोकप्रिय संस्कृति कहा जाता है। हक्स की लोकप्रिय संस्कृति की आलोचना जन संस्कृति को संदर्भित करती है। फ्रैंकफर्ट स्कूल के समर्थकों ने लोकप्रिय संस्कृतियों के बीच अंतर नहीं किया; लोकप्रिय संस्कृति के अनुसार यह एक तुच्छ राष्ट्रवादी और निष्क्रिय संस्कृति थी। हालाँकि, फ्रैंकफर्ट स्कूल में, कई लोगों ने लोकप्रिय संस्कृति और जन संस्कृति के बीच अंतर किया। इस बात पर भी असहमति है कि लोकप्रिय संस्कृति आधुनिक शहरी समाज की रचना है या

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

यह मध्यम वर्ग की रचना है। इसलिए, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि लोकप्रिय संस्कृति एक संस्कृति नहीं है। इस संस्कृति की विविधता इसके सदस्यों की उम्र, लिंग और वर्ग अंतर के कारण है। उदाहरण के लिए, युवा संस्कृति की एक सामाजिक समीक्षा से पता चलता है कि इसके भीतर कई उपसंस्कृतियाँ हैं, जिनके बीच फिर से उम्र, लिंग और क्षेत्रीय अंतर देखा जा सकता है।

जीवन में संस्कृति की भूमिका:

मानव जीवन में संस्कृति का महत्व अत्यधिक है। संस्कृति का सामाजिक महत्व अत्यंत व्यापक है। मानव समाज में संस्कृति की भूमिका की समीक्षा दो पहलुओं से की जानी चाहिए- (i) व्यक्तिगत जीवन पर संस्कृति का प्रभाव, और (ii) समूह जीवन पर संस्कृति का प्रभाव। व्यक्तिगत जीवन पर संस्कृति का प्रभाव संस्कृति सामाजिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती है। व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में संस्कृति की भूमिका अद्वितीय और बहुत महत्वपूर्ण है। संस्कृति के माध्यम से समाजीकृत लोग व्यवहार का एक विशिष्ट तरीका अपनाते हैं और इस प्रकार समाज के सदस्य जटिल परिस्थितियों का आसानी से सामना कर सकते हैं। व्यक्ति सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य कार्य आसानी से कर सकते हैं। संस्कृति व्यक्ति को एक सच्चा इंसान और एक उचित सामाजिक जीव बनाती है। यदि किसी व्यक्ति को समाज और संस्कृति से बाहर रखा जाता है, तो वह खुद को एक वास्तविक व्यक्ति के रूप में व्यक्त नहीं कर सकता है। व्यक्तियों को सामाजिक रूप से सामाजिक प्राणी के रूप में रहना होगा। उसके लिए कुछ योग्यताएँ एवं गुण नितांत आवश्यक हैं। व्यक्ति इन्हें संस्कृति के माध्यम से प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को संस्कृति के माध्यम से सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे पहनावा, शिष्टाचार, भोजन की आदतें आदि में शिक्षित किया जाता है।

संस्कृति के माध्यम से सामाजिक जीवन की विभिन्न घटनाओं की व्याख्या प्राप्त करना इस व्याख्या के अनुसार होता है; व्यक्ति अपना अंतिम कर्तव्य निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, हिंदू समाज की विभिन्न परंपराओं, विभिन्न सुधारों या अंधविश्वासों के अस्तित्व को नकारना उचित नहीं है। समूह जीवन में संस्कृति उतनी ही महत्वपूर्ण है

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जितनी व्यक्तिगत जीवन में। संस्कृति किसी भी समूह से संबंधित व्यक्तियों के बीच 'स्वयं की भावना' पैदा करती है। संस्कृति समूह के सभी सदस्यों को प्रेम के बंधन में बांधती है। स्वस्थ समूह जीवन के लिए समूह के सदस्यों के बीच आपसी सहयोग का वातावरण आवश्यक है। ऐसे वातावरण के निर्माण के लिए एक उपयुक्त दृष्टिकोण संस्कृति के माध्यम से विकसित किया जाता है। संस्कृति एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक शक्ति है। सामाजिक समरसता एवं सुव्यवस्था को बनाये रखने में इस शक्ति की अद्वितीय भूमिका निर्विवाद है। दुनिया के किसी भी देश की सामाजिक व्यवस्था में संस्कृति की इस भूमिका का महत्व और महत्ता विवाद से परे है। संस्कृति सामाजिक संबंधों को निर्देशित करती है। फलतः सामूहिक जीवन का बंधन अक्षुण्ण रहता है।

इस प्रकार समूह सामंजस्य संस्कृति के आधार पर संरक्षित रहता है। समाज व्यक्तियों के बीच ज्ञान प्राप्त करने में रुचि पैदा करता है और बरसाता है। सामाजिक लोगों की इस रुचि को रोकने में संस्कृति भी सहायक भूमिका निभाती है। अवशेष वास्तव में, समूह के सदस्यों के बीच संस्कृति सोच, चेतना और ज्ञान के संदर्भ में अभिप्रेत है। संस्कृति सामाजिक आदर्शों और मूल्यों को वहन करती है। संस्कृति समूह जीवन में व्यक्तियों के व्यवहार को तर्कसंगत बनाती है और उन्हें जिम्मेदार बनाती है। मेक्स संस्कृति विशेष रूप से एक समूह से संबंधित व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करती है। भोजन, वस्त्र, आश्रय, यौन जीवन आदि सांस्कृतिक समूह के सदस्यों के लिए एक विशिष्ट वातावरण बनाते हैं। इस प्रकार संस्कृति सामंजस्यपूर्ण समूह जीवन को संभव बनाने में मदद करती है। सामंजस्य बनाने के अलावा, संस्कृति सामाजिक क्षेत्र में अंतर-राज्य संबंध भी बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सदस्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। परिणामस्वरूप, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सांस्कृतिक संबंध बनते हैं और ये संबंध मजबूत होते हैं। इसलिए, संस्कृति अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी एकता और एकजुटता स्थापित करने में भूमिका निभाती है। सभी समाजों की एक संस्कृति होती है। व्यक्ति और समाज दोनों के लक्ष्यों और हितों की पूर्ति में संस्कृति की सहायक भूमिका निर्विवाद है। संस्कृति मानव समाज की एकजुटता एवं शुद्धता है। संस्कृति शिक्षा के माध्यम से समाज को प्रभावित करती है।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संस्कृति के विभिन्न तत्व:

संस्कृति के तत्वों का उपयोग मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। जो वस्तुएँ मानवीय आवश्यकताओं को पूरा नहीं करतीं उन्हें संस्कृति का तत्व नहीं माना जा सकता या तत्वों के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इस कारण से पृथ्वी की सभी वस्तुओं को मानव संस्कृति का हिस्सा नहीं माना जाता है। समाज और सामाजिक लोगों के लिए उनकी कई और विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न शिक्षा और विकास के तरीकों या प्रणालियों को अपनाया जाता है और हम इन सभी तरीकों या तत्वों को संस्कृति के तत्वों के रूप में स्वीकार करते हैं। पुनः स्थिति के आधार पर उसी वस्तु को संस्कृति का तत्व माना जाता है। उदाहरण के लिए जंगल में कई पेड़ संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन मनुष्य घर बनाने या अन्य चीजों के लिए जंगल से पेड़ों के फर्नीचर का उपयोग करते हैं। समाज में विभिन्न सांस्कृतिक तत्व देखे जा सकते हैं।

वैश्विक संस्कृति की जानकारी विभिन्न देशों के लोगों के बीच आपसी सहयोग, सहानुभूति, सहानुभूति, समाज सेवा, सामाजिक जागरूकता आदि व्यवहार वैश्विक संस्कृति का हिस्सा हैं। लेकिन समाजशास्त्रियों ने संस्कृति को दो घटकों में विभाजित किया है - भौतिक या अवधारणात्मक संस्कृति तथा मानसिक संस्कृति।

भौतिक या संवेदी संस्कृति जब मानव संस्कृति वस्तुओं के रूप में व्यक्त होती है तो उसे भौतिक संस्कृति कहा जाता है। विभिन्न मानव निर्मित वस्तुएं फर्नीचर, मशीनें, घर और सड़कें हैं। विभिन्न तत्त्व आदि भौतिक तत्त्व हैं। युग परिवर्तन के साथ कौन सा परिवर्तन? इन्हीं तत्वों के माध्यम से मानवीय अवधारणाएँ एवं मूल्य विकसित होते हैं। सामाजिक रूप से बंधे लोग अपने निर्णय, ज्ञान और कौशल के आधार पर विभिन्न चीजों का उत्पादन करते हैं। इन सभी आदर्श बाह्य वस्तुओं को संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। उदाहरणों में हिंदू मंदिर, मठ मंदिर, घर, स्कूल, कॉलेज आदि शामिल हैं। मनुष्यों ने इन्हें अपनी प्रतिभा से विकसित किया है। स्वाभाविक रूप से ये सभी वस्तुएँ सांस्कृतिक पहचान की वाहक हैं। द्वितीय. मानसिक या भौतिक संस्कृति: मानव संस्कृति के कुछ तत्व समाज में व्यक्तियों के आदर्श, विश्वास, विचार, सुख आदि हैं। यह पूर्णतः आंतरिक

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

एवं मूल्यवान अवधारणा है, जो मानव स्वभाव को उजागर करती है। संक्षेप में, भौतिक संस्कृति लोगों के दैनिक कार्यों, भावनाओं और विचार प्रक्रियाओं का एक संयोजन है। उदाहरणों में संगीत, साहित्य, नाटक, दर्शन आदि शामिल हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति की आशाएँ और इच्छाएँ, भावनाएँ, दर्द, विचार, अनुभव और प्रकृति की अभिव्यक्तियाँ होती हैं।

शिक्षा और संस्कृति के बीच संबंध:

शिक्षा और संस्कृति दो परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं। समाज की संस्कृति संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था का मार्गदर्शन करती है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि जो समाज लोकतंत्र के आदर्शों का पालन करता है, उस समाज की शिक्षा व्यवस्था में उसका स्थान सर्वोच्च होता है। उस समाज के प्रत्येक बच्चे को लोकतंत्र का सदस्य बनाने के उद्देश्य से लोकतंत्र के सिद्धांतों को सिखाया जाता है और लोकतंत्र से जुड़े विभिन्न मुद्दों से अवगत कराया जाता है। इन कार्यों को करना ही सामान्यतः शिक्षा है। हालाँकि, हम किसी भी देश की सांस्कृतिक स्थितियों या परिस्थितियों से प्रभावित या शासित होने वाली संस्कृति और शिक्षा के बीच संबंध का उचित वर्णन करते हुए शिक्षा पर संस्कृति के प्रभाव और संस्कृति पर शिक्षा के प्रभाव पर चर्चा कर सकते हैं।

शिक्षा का अर्थ और लक्ष्य निर्धारण समाज संस्कृति व्यक्तियों को आदर्शों, मूल्यों और जीवन के तरीकों और समाज को आकार देने में विशेष भूमिका निभाती है। संक्षेप में, जैसी समाज की संस्कृति होती है, वैसा ही शिक्षा का लक्ष्य होता है। शिक्षा का लक्ष्य सदैव पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त होता है। जैसा कि संस्कृति से होता है, लक्ष्य निर्धारण पाठ्यक्रम और प्रभाव से मुक्त नहीं है। पाठ्यक्रम का विकास समाज के विभिन्न आदर्शों, विचारों, मूल्यों आदि के आधार पर अर्थात विभिन्न सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। पाठ्यक्रम में ऐसी सामग्री रखी जाती है, जो इस समाज की संस्कृति की संचालक होती है। संस्कृति और शिक्षा प्रणाली महत्वपूर्ण रूप से संबंधित हैं। क्योंकि समाज की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ यह तय करती हैं कि शिक्षा कैसे सिखाई जा सकती है या सिखायी जायेगी। प्राचीन काल में जब शिक्षा शिक्षक-उन्मुख थी, छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए बाध्य किया जाता था। वहां उनके हितों और जरूरतों की

उपेक्षा की गई लेकिन वर्तमान शिक्षा बाल-केंद्रित है। इसलिए, उन्हें बच्चे की रुचियों, मानसिक क्षमताओं, संभावनाओं, जरूरतों आदि को महत्व देते हुए विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए कहा जाता है। इसलिए, यह देखा जाता है कि सीखने की पद्धति कितनी प्रभावी है, समाज की संस्कृति यह निर्धारित करती है कि शिक्षण प्रक्रिया कैसे की जाएगी।

लोगों की जीवनशैली और विचार प्रक्रिया में सांस्कृतिक पहलू व्यवस्था की अवधारणा के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि समाज की सूचना शिक्षा प्रणाली के उचित क्रम को निर्धारित करने के लिए किसी अन्य कारक की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के तौर पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान लोकतांत्रिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र अनुशासन, उन्मुक्त स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण लोकतांत्रिक संस्कृति से ही होता है। पाठ्यपुस्तकें उस पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाती हैं जो संस्कृति निर्धारित करती है। पाठ्यक्रम के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के उद्देश्य से लिखित रूप या पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया जाता है। तो, स्वाभाविक रूप से, किताबें संस्कृति से प्रभावित होती हैं। किसी समाज के सांस्कृतिक पहलू को नजरअंदाज करना या संस्कृति के खिलाफ किताब लिखना, इसीलिए किताब पर प्रतिबंध लगाया जाता है।

प्रत्येक व्यक्तिगत शिक्षक समाज का एक अलग सांस्कृतिक आदर्श है और मूल्यों का पालन करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे समाज के सबसे जिम्मेदार सदस्य हैं। लक्ष्य निर्धारित करने में शिक्षकों की जिम्मेदारी अधिक होती है, इसलिए वे स्वयं भी वैसे ही समाज से प्रभावित होते हैं। बच्चों को उस संस्कृति में संस्कारित करने की जिम्मेदारी उनकी है। उपयोगितावादी दर्शन कहता है कि स्कूल समाज के संस्करण का एक सूक्ष्म रूप है। इसलिए, यह स्वाभाविक है कि समाज की संस्कृति विद्यालय के विभिन्न कार्यों को प्रभावित करती है। दूसरे शब्दों में, स्कूल सांस्कृतिक परिवर्तन, संस्करण और विकास का स्थल है।

संस्कृति पर शिक्षा का प्रभाव:

जिस प्रकार शिक्षा पर संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार शिक्षा और संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार शिक्षा संस्कृति के वाहक या वाहक के रूप में भूमिका निभाती है, उसी प्रकार समाज में संस्कृति की प्रकृति शिक्षा द्वारा निर्धारित

होती है। शिक्षा का मुख्य कार्य मानव बच्चे के बौद्धिक विकास में मदद करना है और साथ ही उसे समाज की सांस्कृतिक परंपराओं के अनुकूल बनाना है। प्रत्येक राष्ट्र या समाज अपनी संस्कृति को सदैव सुरक्षित रखता है और उसका प्रदर्शन करना चाहता है। महान संस्कृति के प्रसार के लिए पर्याप्त संरक्षण आवश्यक है। संस्कृति के संरक्षण की इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को समाज की शिक्षा व्यवस्था विशेष सावधानी से निभाती है। यदि संस्कृति को संरक्षित रखा जायेगा तभी वह एक पीढ़ी में लुप्त हो जायेगी। इसलिए संस्कारी लोगों द्वारा संरक्षित संस्कृति को अगली पीढ़ी तक सुरक्षित रखना जरूरी है। ओटावा के अनुसार, शिक्षा संस्कृति को प्रसारित करने के मुख्य साधन के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है "शिक्षा का कार्य सामाजिक मूल्यों और विचारों को समाज के युवा और सक्षम सदस्यों तक पहुंचाना है"। शिक्षा संस्कृति को संरक्षित और संवारने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नई संस्कृति विकसित करने में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। भले ही आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने प्राचीन विचारों, मूल्यों और वर्तमान सभ्यता की संस्कृति को त्याग दिया है, शिक्षा बदलती सामाजिक व्यवस्था में उन्हें पुनः स्थापित और विकसित करने की भूमिका निभाती है।

भारतीय संस्कृति के लिए पाठ्यक्रम: भारत विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है। वास्तव में, जो चीज़ भारतीय संस्कृति को अन्य प्राचीन सभ्यताओं के बीच अद्वितीय बनाती है, वह बाहरी प्रभावों को समायोजित करने और आत्मसात करने और उन्हें अपने सांस्कृतिक ताने-बाने में बुनने की क्षमता है। इस समग्र प्रभाव ने न केवल भारत के सांस्कृतिक परिवेश को समृद्ध किया है बल्कि इसे और अधिक मजबूत भी बनाया है। भारतीय कला, वास्तुकला, संगीत, भाषा, दर्शन और धर्म सदियों से चले आ रहे प्रभाव की इस विविधता को दर्शाते हैं। यही भारतीय संस्कृति और विरासत की खूबसूरती है।' भारतीय नागरिकों के रूप में, हमें इस बहुलवादी और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और इसका निष्पक्ष अध्ययन करने और इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं: शिक्षार्थियों को भारत की संस्कृति और विरासत के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना। शिक्षार्थियों को धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला, शिक्षा, भाषा और साहित्य के क्षेत्रों में हमारे

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

पूर्वजों के योगदान से परिचित कराना। शिक्षार्थियों को भारत की संस्कृति के सभी पहलुओं में विविधता के बीच अंतर्निहित एकता की सराहना करने में सक्षम बनाना। विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव से शिक्षार्थियों को परिचित कराना। शिक्षार्थियों को भारतीय संस्कृति की समग्र प्रकृति की सराहना करने में सक्षम बनाना। शिक्षार्थियों में राष्ट्र के प्रति प्रेम और अपनेपन की भावना विकसित करना।

निष्कर्ष:

संस्कृति लोगों के दैनिक जीवन में विभिन्न शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक कार्यों को करने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है। संस्कृति विशेष रूप से लोगों को बदलते परिवेश के अनुरूप ढलने और उचित ज्ञान और कौशल के माध्यम से उनकी वास्तविक क्षमता का एहसास करने में मदद करती है। फिर, विभिन्न युगों का ज्ञान संस्कृति द्वारा ही संरक्षित और आगे बढ़ाया जाता है। संस्कृति के एक घटक के रूप में भाषा शिक्षा के माध्यम से उस ज्ञान आधार को आगे बढ़ाती है। आधुनिक शिक्षा का मुख्य कार्य लोगों को परिष्कृत व्यवहार का आदी बनाना है। क्या संस्कृति यह तय करती है कि समाज में कौन सा व्यवहार उचित या परिष्कृत है? बच्चे को भावी जीवन के लिए तैयार करने की शिक्षा में आजीविका निर्धारण की विशेष भूमिका होती है। अर्थात् उचित शिक्षा से शिक्षित होकर बच्चा भावी जीवन में अपने पेशे की सर्वोच्च जिम्मेदारी निभा सकता है। और उस जिम्मेदारी को निभाने के लिए बच्चे को बचपन से ही संस्कारित होना चाहिए।

सन्दर्भ सूची-

1. श्रीनिवास, एम. एन (1957), कास्ट इन मॉडर्न इंडिया, द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, 16(4): 529-548
2. बकलैंड, सी.ई. (1971), डिक्शनरी ऑफ इंडियन बायोग्राफी, अर्डेन्ट मीडिया।
3. शर्मा, आर.एन., और शर्मा, आर.के. (1996), हिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन इन इंडिया. अटलांटिक प्रकाशक एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
4. स्मिथ, बी. (2008), एडमंड बर्क, वॉरेन हेस्टिंग्स ट्रायल, एंड द मोरल डायमेंशन ऑफ़ करप्शन. पोलिटी, 40(1): 70-94.

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. वत्त्याचार्य, डॉ. दिब्येनुडु (2013). एजुकेशन एंड डेवलपमेंट. शोवा, बेनियाटोला लेन, कोलकाता।

6. हेमसाथ, सी.एच. (2015), इंडियन नेशनलिज्म एंड हिन्दू सोशल रिफार्म (खंड 2232) प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

7. शास्त्री, डॉ. एस. श्रीकांत (2021). इंडियन कल्चर, नेशन प्रेस मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, बानगरम, तमिलनाडु, चेनाई।

8.वात्याचार्य, डॉ. दिब्येनुडु, एजुकेशन एंड डेवलपमेंट. शोवा, बेनियाटोला लेन, कोल-9, 2013 शास्त्री, डॉ. एस. श्रीकांत, इंडियन कल्चर, नेशन प्रेस मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, बानगरम, तमिलनाडु, चेनाई, 2021.